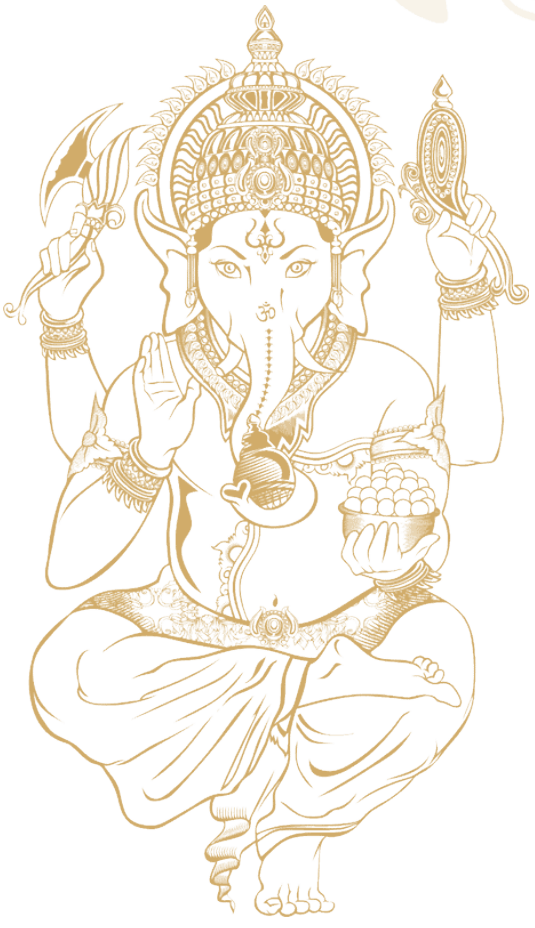

Mr.

17 Aug 2025

11:58 AM

Kathmandu

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119154101**

तिथि 17/08/2025 **समय** 11:58:00 **वार** रविवार **स्थान** Kathmandu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:58
अक्षांश 27:05:00 उत्तर **रेखांश** 85:04:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 86:15:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:04:44 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	09:36:48 घं
वेलान्तर	00:04:05 घं
सूर्योदय	05:37:01 घं
सूर्यास्त	18:39:59 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	भाद्रपद
पक्ष	कृष्ण
तिथि	9
नक्षत्र	रोहिणी
योग	व्याघात
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	सर्प
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	वा-वासुदेव
पाया(रा.-न.)	लौह-स्वर्ण
होरा	मंगल
चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी

चन्द्र 6वर्ष 10मा 13दि

चन्द्र

17/08/2025
01/07/2032

	00/00/0000
	00/00/0000
	17/08/2025
गुरु	30/09/2026
शनि	01/05/2028
बुध	30/09/2029
केतु	01/05/2030
शुक्र	31/12/2031
सूर्य	01/07/2032

योगिनी

सिद्धा 4वर्ष 9मा 21दि

सिद्धा

17/08/2025
09/06/2030

	17/08/2025
संकटा	09/05/2026
मंगला	19/07/2026
पिंगला	08/12/2026
धान्या	09/07/2027
भ्रामरी	18/04/2028
भद्रिका	09/04/2029
उल्का	09/06/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			23:24:13	तुला	विशाखा	2	गुरु	शनि	---	0:00			
सूर्य			00:23:39	सिंह	मघा	1	केतु	केतु	मूलत्रिकोण	2.38	कलत्र	पितृ	वध
चंद्र			14:10:21	वृष	रोहिणी	2	चंद्र	गुरु	मूलत्रिकोण	1.18	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			12:14:27	कन्या	हस्त	1	चंद्र	राहु	शत्रु राशि	1.12	मातृ	भ्रातृ	जन्म
बुध			12:07:03	कर्क	पुष्य	3	शनि	मंगल	शत्रु राशि	1.04	पुत्र	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु			20:51:36	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.20	अमात्य	धन	क्षेम
शुक्र			25:46:28	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	बुध	मित्र राशि	1.25	आत्मा	कलत्र	क्षेम
शनि	व		06:43:30	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	बुध	सम राशि	0.99	ज्ञाति	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		24:20:39	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		24:20:39	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

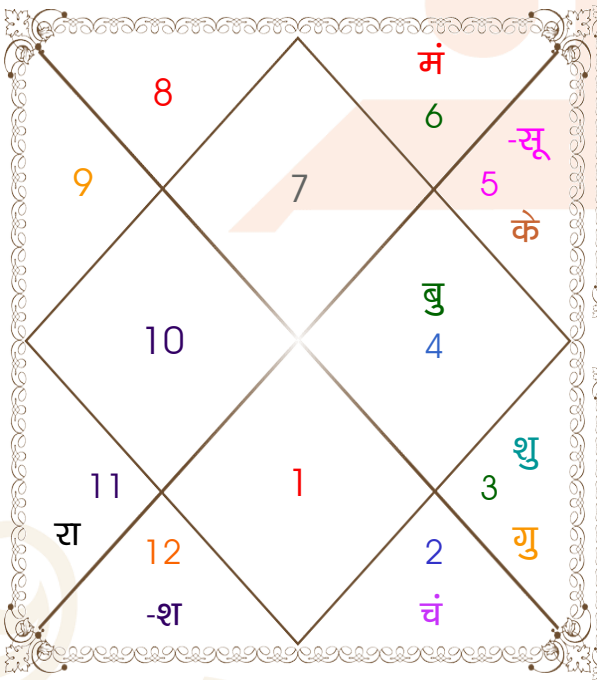

चन्द्र कुंडली

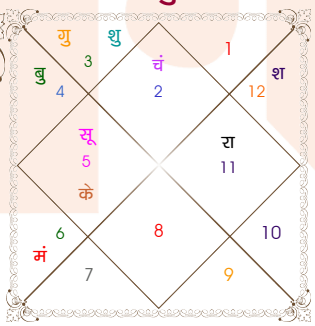

नवमांश कुंडली

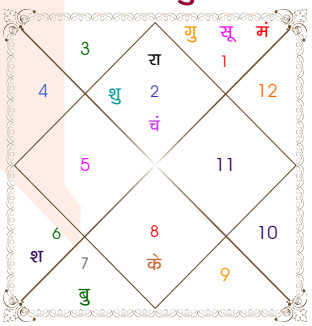

सर्वाष्टकवर्ग

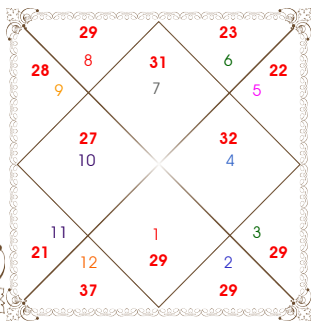

दशमांश कुंडली

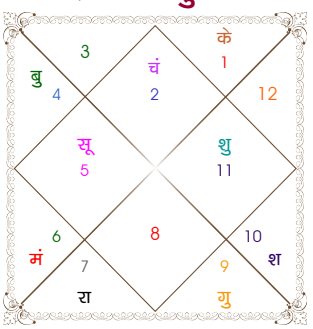

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

नक्षत्रफल

आप रोहिणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। आपका मनुष्य गण, वैश्यवर्ण, मूषक वर्ग सर्प योनि तथा अन्त्य नाडी होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म का पहला अक्षर व या ब से प्रारम्भ होगा। यथा बलीराम, बनवारी लाल आदि।

आप ईश्वर में विश्वास रखने वाले व्यक्ति होंगे। समस्त धर्म सम्बन्धी कार्यों के आप ज्ञाता तथा उनको शास्त्रानुसार सम्पन्न करने वाले होंगे। आप दर्शनीप स्वरूप वाले होंगे। आप वाकपटु अर्थात् बोलने में अत्यन्त चतुर होंगे। सार्थक एवं सटीक उत्तर तत्काल देने की आपके अन्दर सामर्थ्य होगी। बुद्धि आपकी अत्यन्त तीव्र होगी तथा कठिन से कठिन विषय को स्पष्ट एवं सुगम रीति से समझाने की कला में आप निपुण होंगे।

धर्म कर्म कुशलः कृषीबलश्चारूशीलः विलसत्कलवेरः।
वाग्विलास कलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्यजन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न जातक धर्म कर्म करने में कुशल, कृषि कर्म से आजीविका चलाने वाला, सुन्दर स्वभाव एवं शरीर वाला, वाकपटु तथा मेधावी होता है।

आप आजीवन धनवान रहेंगे तथा धन का अभाव आपको प्रतीत नहीं होगा। आप दूसरे के उपकार को हृदय से मानेंगे। अर्थात् कृतज्ञता का भाव आपके अन्दर विद्यमान होगा। उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण मान तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आपकी वाणी सबके मन को अच्छी लगेगी। आप सत्य का हमेशा पालन करेंगे तथा सत्य वाणी ही बोलेंगे।

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
मान सागरी

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्मा जातक धनवान, कृतज्ञ, बुद्धिमान, राजमान्य, प्रियवक्ता, सत्यवादी तथा देखने में सुन्दर होता है।

आपका शरीर सामान्य रूप से स्वस्थ रहेगा। आप अहर्निश उत्साह से सम्पन्न रहेंगे तथा प्रत्येक कार्य को उत्साहपूर्वक सम्पन्न करेंगे। आपका व्यवहार तथा आचरण श्रेष्ठ होगा जिसके कारण आप अन्य जनों के प्रशंसा के पात्र बने रहेंगे।

धनी कृतज्ञो मेधावी नीरोगी च प्रियंवदः।
नित्योत्साही सुशीलश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
जातक दीपिका

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान, प्रियवद्, नित्य उत्साही तथा सुशील होता है।

जीवन में आप हमेशा शारीरिक तथा आत्मिक शुद्धता का ध्यान रखेंगे तथा प्रयत्नपूर्वक इसका पालन करेंगे। आप स्थिर बुद्धि के स्वामी होंगे। अतः जो भी कार्य सम्पन्न करेंगे एकाग्रचित होकर सम्पन्न करेंगे। शीघ्रता से कार्य करना आप उचित नहीं समझेंगे।

रोहिण्यां सत्यं शुचिः प्रियंवदः स्थिरमतिः सुरूपश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न मानव सत्यवादी, पवित्र, प्रिय बोलने वाला, स्थिर बुद्धि तथा सुन्दर होता है।

देखने में आपका शरीर स्वस्थ ही दृष्टिगोचर होगा। दूसरे लोगों के दोष जानने में भी आप अतिच्छुक रहेंगे तथा ज्ञान प्राप्त करने में भी आपकी इच्छा रहेगी।

रोहिण्यां पररन्ध्रवित्कृशतनुर्वोधी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दूसरे के दोष जानने वाला, दुर्बल शरीर, ज्ञानयुक्त तथा परस्त्री में रत रहता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीड़ित रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

आप वृष राशि में पैदा हुए हैं। अतः आपके गाल स्थूल तथा वर्ण लालिमा युक्त गौरवर्ण होगा। आपके नेत्र बड़े-बड़े तथा मोटे होंगे। आलस्य का समावेश भी नैसर्गिक रूप से आपके अन्दर रहेगा। श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न लोगों या विद्वानों के प्रति आप सेवा तथा श्रद्धा का भाव रखने वाले होंगे। गुरू तथा ब्राहमण के आप भक्त होंगे। इनकी आप सब प्रकार से आज्ञा पालन तथा सेवा सत्कार करेंगे। आपका स्वभाव वात तथा कफ मिश्रित रहेगा। बुद्धि आपकी अच्छी रहेगी तथा बाल घुँघराले होंगे। आप जीवन में सुखी रहेंगे तथा दानशीलता की प्रवृति का भी अनुपालन करेंगे।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरुजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आजीवन आप विभिन्न प्रकार के सुखों का उपयोग करेंगे। शुद्धता तथा सफाई को आप पसन्द करेंगे। अपने समस्त कार्यों को दक्षतापूर्वक सम्पन्न करने में आप सक्षम होंगे। आप बलवान तथा विलासी प्रवृति के होंगे। आपके पास धनागम प्रचुर मात्रा में होता रहेगा अतः भौतिक सुख साधनों पर आप उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगे। तेजस्विता भी आपके अन्दर परिलक्षित होगी तथा आपके सभी मित्र गुणवान तथा अच्छे चाल चलन एवं स्वभाव वाले होंगे। साथ ही आपकी मित्रता दीर्घकाल तक स्थिर रहेगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपका मुख तथा जानु का आकार दीर्घ होगा। आप अपने जीवन के प्रथम दो भागों में कष्ट पाएंगे तथा अन्तिम दो भागों को सुख तथा आनन्द से व्यतीत करेंगे। स्त्री वर्ग से आप कुछ अधिक ही आकर्षित रहेंगे। त्याग तथा क्षमाशीलता का गुण आप में विद्यमान रहेगा। प्रारम्भिकावस्था में आपको कष्ट सहने पडेंगे। तथा परिश्रम भी कुछ अधिक ही करना पडेगा। आपके मुख पीठ तथा बगल में तिल, मस्सा या किसी चोट का निशान हो सकता हैं।

पृथूरुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

सन्तति में आपकी कन्याओं की संख्या अधिक रहेगी। आपका आचरण तथा व्यवहार उत्तम रहेगा। आप धन ऐश्वर्य का उपभोग करते हुए यश की प्राप्ति करेंगे।

दाताकान्त यशोधनोरुचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आपका वक्षस्थल विशाल तथा बाल घने काले तथा घुँघराले होंगे। आपकी प्रवृति काम पीडित होगी। आप न्यायप्रिय होंगे तथा सही गलत को अलग-अलग करने में चतुर होंगे। आपकी चलने की गति दर्शनीय होगी तथा शरीर के सारे अंग दीर्घ स्थूल तथा सुडौल होंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः

मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आपको धीमी गति से चलना रूचिकर लगेगा। अपने समस्त कार्यों को आप बुद्धिमता पूर्ण ढंग तथा चतुराई पूर्वक सम्पन्न करेंगे। दूसरे के प्रति उपकार की भावना भी आपके अन्दर निहित होगी तथा जीवन में प्रयत्न पूर्वक इसका अनुपालन करेंगे। इस प्रकार अपने सत्कार्य तथा पुण्य कार्यों से आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

देखने में आप सुन्दर होंगे। मुखाकृति थोडी दीर्घ होगी तथा सविलासगमनप्रिय प्रकृति के होंगे। आप में कष्ट सहने की पूर्ण शक्ति होगी। आप उच्चाधिकार प्राप्त कोई अधिकारी या पदाधिकारी हो सकते हैं। आपके पेट में जठराग्नि की प्रधानता एवं प्रबलता व्यक्त रहेगी। आप युवावस्था तथा बुढ़ापे में सुखी रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अच्छे स्वभाव वाले होंगे तथा भगवान शिव तथा विष्णु की आराधना करने वाले होंगे।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रवृति के होंगे। आप देवता तथा ब्राहमणों में पूर्ण श्रद्धा रखेंगे तथा समायानुसार इनका पूजन तथा सत्कार करते रहेंगे। आपकी प्रवृति अल्प मात्रा में घंमडी भी होगी। आप एक दयावान पुरूष होंगे तथा अवसरानुकूल दीन दुखियों की सेवा तथा सहायता करेंगे। आप बलवान होंगे साथ ही एक या एक से अधिक कार्यों या कलाओं के जानने वाले होंगे। आप परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जित करके ज्ञानी कहलाएंगे। शरीर आपका सुन्दर एवं कान्ति से युक्त रहेगा। जो दर्शनीय होगा तथा आप बहुत से लोगों को सुखी रखने वाले होंगे।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

धन तथा मान सम्मान से आप आजीवन युक्त रहेंगे तथा इनका आपको कभी भी अभाव नहीं रहेगा। निशाने बाजी की कला में आप अत्यन्त ही दक्ष होंगे इसमें आपका प्रतिरोधी कोई ही होगा। आपका शरीर गौरवर्ण का होगा तथा सम्पूर्ण नगरवासियों को आप वश में करने वाले होंगे अर्थात् आप किसी नगर के सम्माननीय व्यक्ति हो सकते हैं। साथ ही आँखें भी आपकी विशाल होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

आपका जन्म सर्प योनि में हुआ है। आपके स्वभाव में यदा कदा क्रोध का भाव भी उत्पन्न होगा। साथ ही आप चंचल प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा जिहवा भी आपकी अत्यन्त चंचल एवं स्वाद लोलुप होगी। हर समय विभिन्न स्वादों को लेने का आपका मन करेगा।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा

सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

मार्गशीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी, तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनि करण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा ये समय आपके लिए अनिष्ट फलकारी है। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी, तथा अमावस्या तिथियों, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग एवं शकुनिकरण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण, क्रय-विक्रय लेन देन आदि कार्य बिल्कुल भी न करें अन्यथा अशुभ फलों की प्राप्ति होगी तथा हानि के योग बनेंगे। साथ ही शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा में भी कोई महत्वपूर्ण कार्य न करें। इसके अतिरिक्त इसी समय पर शरीर का भी ध्यान रखें।

जब कभी समय आपके प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति हो रही हो, नौकरी या उन्नति में कोई व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय पर आपको नियमित रूप से शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए तथा श्वेत वस्त्र, श्वेत मोती, चावल, शहद, कपूर आदि पदार्थो का दान भी करना चाहिए। इस प्रकार करने से मानसिक व्याकुलता में न्यूनता आएगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपको शुक्र के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 20 हजार जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे भी अशुभ फल कम होंगे तथा लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। श्रद्धानुसार आप भगवान विष्णु तथा शिव की आराधना भी कर सकते हैं।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुकाय नमः।